International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 368-372

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में पलायन : ''एक गम्भीर समस्या''

डॉ0 शैलेश भंडारी

Assistant Professor, Department of History, Chanakya Law College, Rudrapur, Uttarakhand, India

प्रस्तावना

प्राणी मात्र को अपने निवास स्थान तथा क्षेत्र से लगाव होता है। यह एक प्राकृतिक तथा स्वाभाविक क्रिया है। पक्षी तथा जानवर भी सूर्य के अस्त होने तथा दिवस के अवसावन पर अपने निवास स्थान पर आते हैं। फिर हम तो इन्सान हैं क्यों न हमें अपने निवास स्थान तथा क्षेत्र से लगाव हो?

''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''

अर्थात माँ और मातृभूमि स्वर्ग से बढ़कर है जिसे कभी त्यागा नहीं जाता है और यह जीवन का अभिन्न भाग है। जिस प्रकार शरीर और आत्मा का सम्बन्ध है। उसी तरह हमारा माँ तथा मातृभूमि के साथ है।

''वह हृदय नहीं पत्थर है जिसे स्वदेश का प्यार नहीं''

उत्तराखण्ड के निवासियों को भी अपने भू–भाग से लगाव होना लाजमी है क्योंकि यहाँ की आवोहवा तथा नीर शुद्ध है और यहाँ के जल, जंगल और जमीन सोना उगलने वाली हैं। उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले के गंगोत्री नामक स्थान से निकलने वाली गंगा नदी का पानी महीनों तक बोतल या बन्द डिब्बे में रखने के बावजूद खराब नहीं होता है। इसका कारण हिमालय के खनिजों का रासायनिक अभिक्रिया ही हो सकता है। गंगोत्री से निकले वाली गंगा नदी हरिद्वार से मैदानों में प्रवेश करती है और लगभग 2500 कि0मी0 तक इसका प्रवाहित क्षेत्र है। इसी गंगा के मैदानों में भारत के प्रमुख शहर जैसे– इलाहाबाद, पटना, कलकत्ता आदि प्रमुख शहर स्थित है। गंगा नदी को भारत में कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है। लगभग 60 प्रतिशत भारत की जनसंख्या गंगा नदी के मैदानी क्षेत्रों में निवास करती है और उसका भरण–पोषण उपयुक्त रूप से होता है। सनत् रहे कि गंगा नदी का उद्भव उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले के गंगोत्री नामक स्थान से होता है। अल्मोड़ा जिले के सालम क्षेत्र में स्थित पनार नदी से प्राचीन काल में सोना निकाला जाता था। इसी प्रकार उत्तराखण्ड के अनेक नदियों का पानी उपयुक्त, लाभकारी तथा स्वास्थ्यवर्धक है।

उत्तराखण्ड के वन सम्पदा में देवदार, बाँज, तुन, उदीस, चीड़, खड़क, पाँगर, भिकुआ आदि है। इसी प्रकार जड़ी–बूटियों में सालम पंजा, रीठा, तिमूर, किलमोड़ी, सिल्फोड़ा, रामबाँस, ऐलूवीरा, आंवला, बुराँश, क्वैराल, गेठी, उमर, सालम मिश्री आदि प्रमुख औशधियाँ विश्व प्रसिद्ध हैं। उत्तराखण्ड के हिमालय क्षेत्र के वन आयुर्वेदिक औशधि के लिये जाने जाते हैं यहाँ के प्रत्येक वृक्ष का आयुर्वेदिक महत्व है।

उत्तराखण्ड की भूमि में कशि का अपना अलग महत्व है। यहाँ की जमीन में सब्जी– आलू, मूली, मटर, भिन्डी, प्याज, लौकी, टमाटर, बैंगन आदि उगाये जाते हैं। दालों में– गहत, मसूर, मॉस (उडद), भट (सोयाबीन) आदि है। मोटे अनाजों में– मडुवा, जौ, मदिरा, मक्का, बाजरा आदि हैं। फलों में– सेब, आड़ू, खुमानी, आम, केला, माल्टा, सन्तरा, काफल, पपीता, तिमिर, च्यूरा, दाडिम, अनार, ककडी आदि हैं। उपर्युक्त चीजों का महत्व में उसका मिठास है और मैदानी क्षेत्रों में उत्तराखण्ड के कृषि उत्पाद की माँग बहुत ज्यादा रहती है।

उत्तराखण्ड का भू–भाग अपने वाद्य यन्त्रों, सुरों तथा संगीत के लिये भी प्रसिद्ध है। उत्तराखण्ड की वादियाँ यहाँ के पारम्परिक तथा स्थानीय संगीत से गूँज उठती है। इन पारम्परिक गायकों में श्री गोपाल बाबू गोस्वामी सर्वप्रथम हैं। उनके प्रमुख गीत निम्नलिखित है–

1. हिमाला को उचा डाना तेरो–मेरो साथ,
   रंगीलो गढ़वाल मेरो, छबीलो कुमायुँ।।

2. घुघुती न बासा, आम की डाई में घुघुती न बासा
   तेरी घुर–घुर सुनी, मैं लागो उदासा।
   स्वामी मेरो परदेशा, बर्फिलो लद्दाखा।।

3. भुर–भुर उजाव हैगो, डान काना में भुर–भुर

इसके अलावा उत्तराखण्ड के संगीत में गीत, वैर, भगनौल, जोड़, न्योली, चाचरी आदि प्रसिद्ध है।

देवभूमि में अनेक प्रकार के झोड़े गाये जाते हैं। इनमें प्रमुख निम्न हैं–

क) खोल बगस पितलै वेली, खोल बगस पितलै वेली
   लौदिछा–लौदिछा वौज्यू, सुनपती शौके की चेली।
   कॉ त्वीले देखिछ च्याला, सुनपती शौके की चेली।
   कॉ त्वीले सुणिछ च्याला, सुनपती शौके की चेली।
   नारिग का फ्यास कसी, सुनपती शौके की चेली।
   ल्यैदिया–ल्यैदिया वैज्यू, सुनपती शौके की चेली।

ख) तुम ना बोलो सासु, झगड़ है जालो।
   झगड़ है वैर, कजिया है जालो।।
   सासू का सर्किल, ब्वारी का दफ्तर
   हिट ब्वारी चनूली, गजारा गोड़ी औनौ
   मेरी चप्पल की खूटी, कच्चारा लागी जाछौ।

ग) गोरि गंगा, भागीरथी को के भलो रेवाड़ा।
   खोल दे माता, खोल भवानी, धरम केवाड़ा
   के लै रैछे भेट–वैना, म्यारा दरवारा
   द्वि जौया वाकरा लायू, त्यारा दरवारा।
   के लै रैछो भेट–वैना, के खोलू केवाड़ा।
   छि जोड़ा निसाण लायू, त्यारा दरवारा।
   खोल दे माता, खोल भवानी, धरम केवाड़ा

इसके अलावा उत्तराखण्ड के वाद्य यन्त्रों में प्रमुख वाद्य यन्त्र निम्नलिखित है– मुरली, भँकोरा, तुरही, रणसिंह, नागफणी, शंख, मशकवीन, ढोल, दमाऊँ ढोलक, छुड़का, डौर, डफली, नगाड़ा, सारंगी, विणई, कासे की थाली, कसेरी, खंजरी आदि।

उत्तराखण्ड का इतना उच्च स्तरीय प्राकृतिक विरासत, जीवन शैली, रहन–सहन, खान–पान, संगीत, शुद्ध वायु तथा जल होने के पश्चात भी आज उत्तराखण्ड के हालात खराब है और 2001 में उत्तराखण्ड के नये राज्य के गठन के पश्चात तो कम से कम इस राज्य का उत्थान होना चाहिये था लेकिन इस राज्य के विकास की कहानी दिन–प्रतिदिन खराब होती जा रही है। यहाँ का राजनैतिक स्तर भी क्रमशः गिरता जा रहा है। ऐसे कौन से कारक हैं जो उत्तराखण्ड में प्लायन के कारण है। इसकी चर्चा निम्नलिखित अध्ययन द्वारा की जा रही है–

1. आर्थिक कारण
2. बेरोजगारी
3. शिक्षा का अभाव
4. प्राकृतिक आपदायें
5. स्वास्थ्य सेवायें
6. भूमि की उर्वरकता में कमी
7. वनों का कटान
8. सामाजिक कारण
9. मनोवैज्ञानिक कारक
10. पारिस्थितिक असंतुलन
11. अधिसंरचना में कमी–
    - क) सड़कें
    - ख) अस्पताल भवन
    - ग) स्कूल भवन
    - घ) शौचालय
    - ड़) संचार व्यवस्थायें
    - च) बिजली
    - छ) पानी
    - ज) पंचायत घर
    - झ) सामुदायिक केन्द्र

1. आर्थिक कारण

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में पलायन का मुख्य कारण आर्थिक है। सरकार द्वारा किसानों को बीज, खाद, कीटनाशक तथा कृषि उपकरणों को कम दामों (Subsidy) में देने की योजना बनानी चाहिये। इसमें सबसे पहले गरीब जनता (बी.पी. एल.) को स्थान देना चाहिये। लेकिन Subsidy का प्रावधान दोनों के लिय अर्थात गरीब जनता (बी.पी.एल.) तथा आम जनता (ए.पी.एल.) के लिये हों। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में पलायन को रोकने के लिये सरकार को विशेष बैक नीति के तहत किसानों को ऋण सुविधा मुहैया कराना चाहिये। किसानों को उन्नत प्रकार के बीजों, कृषि उपकरणों, कीटनाशकों, खादों आदि को उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों की जलवायु के अनुसार आवंटन करना चाहिये और समय–समय पर इस आवंटन की पारदर्शिता को जाँचना चाहिये। क्योंकि हिमालय प्रदेश तथा उत्तराखण्ड की जलवायु लगभग समान है तथा हिमाचल में पलायन की समस्या नहीं के बराबर है। उत्तराखण्ड सरकार को पर्वतीय क्षेत्रों के अच्छे हिसानों तथा उनके कृषि उत्पादों को पुरूस्कृत करने की योजना बनानी चाहिए।

2. भूमि की उर्वरकता में कमी

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में उच्चावच के कारण भूमि कटाव होता है। इससे मिट्टी की उर्वरकता प्रत्येक वर्ष वह जाती है। चौमास में तो यह भूमि कटाव अपने शिखर पर होता है। किसान पूरे वर्ष भर मेहनत से जितनी भी खाद डालता है मानसून के समय में उसकी मेहनत बह जाती है। वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन किया गया है कि 1 सेमी0 मोटी मिट्टी की परत बनने में लगभग 100 वर्ष का समय लगता है लेकिन उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में उच्चावच तथा ढलान के कारण 1 सेमी0 मोटी मिट्टी की परत चौमास तथा मानसून के समय में लगभग 10 मिनट में वह जाती है। वैज्ञानिक रूप से इसे रोकने की महती आवश्यकता है। भूमि की उर्वरकता में कमी, भूमि का कटाव होना तथा अच्छी फसल का न होना व कृषि उत्पादों में कमी होना भी उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों से पलायन का कारण है।

इसमें आई.सी.ए.आर., कृषि विश्वविद्यालय, पन्तनगर, विवेकानन्द प्रयोगशाला अल्मोड़ा तथा अन्य कृषि से सम्बन्धित संस्थानों को गम्भीर अध्ययन की आवश्यकता है तथा भूमि कटाव को रोकने के उपाय सुझाने होंगे क्योंकि भूमि की उर्वरकता में कमी तथा भूमि कटाव सीधे–सीधे उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में पलायन का कारण है। साथ ही पर्वतीय क्षेत्रों के किसानों को भी भूमि की उर्वरकता शक्ति पर ध्यान देना होगा। वर्षों पहले के समय की तरह अपनी भूमि पर खाद आदि नियमित रूप से डालना होगा। भूमि की उर्वरकता शक्ति को बढ़ाने के लिये सम्मिलित रूप से प्रयास करने होंगे।

3. बेरोजगारी

भूमि की उर्वरा शक्ति की कमी के कारण उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में बेरोजगारी बढ़ी है तथा इससे पर्वतीय क्षेत्र के बन्दे आर्थिक रूप से कमजोर हो गये। बेरोजगारी बढ़ने के अन्य कारण भी है। इनमें से एक रोजगार के साधनों की कमी तथा पर्वतीय क्षेत्रों में सरकार द्वारा औद्योगिक विकास लगभग शून्य के बराबर होना है। सरकार अगर बड़े उद्योगों की स्थापना करके जोखिम नहीं उठाना चाहती हैं तो कम से कम लघु तथा कुटीर उद्योगों की स्थापना तो करवा ही सकती है। इससे ग्रामीण इलाकों का कच्चा माल लघु तथा कुटीर उद्योगों के लिये उपयोगी हो सकता है और इसके द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों के रोजगार की समस्या को कम किया जा सकता है। बेरोजगारी के कारण शिक्षित लोग ज्यादा पलायन कर रहे हैं। बेरोजगारी के कारण पूरे के पूरे गाँव खाली हो गये हैं। पर्वतीय क्षेत्रों के गाँवों में या तो बूढ़े–बुजुर्ग लोग या फिर सरकारी नौकरी कुछ थोड़े लोग जिनकी सरकारी नौकरी गाँवों के आसपास है रह रहे हैं। हालात यह कि सरकारी नौकरी करने वाले लोग सेवा समाप्ति के बाद गाँवों को छोड़कर मैदानी इलाकों में बसने का विचार बनाये हैं वो गाँव जो कभी भरे–पूरे जनता रहती थी और जहाँ मधुर–संगीत की आवाज सुनायी देती थी। आज वहाँ अगर गाँवों में बूढ़े–बुर्जुग की मृत्यु हो जाती है तो शवयात्रा के लिये लोग मिलने मुस्किल हो जाते हैं। रोजी–रोटी ने अपने बुर्जुगों की मौत का भी सौदा कर लिया है। बेरोजगारी के कारण पलायन की समस्या शिखर पर है।

4. स्वास्थ्य सेवायें

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों की स्वास्थ्य सेवायें भी चरमराई हुई है। स्वास्थ्य सेवायें एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। बिमारी की हालात में लोग अपने मरीज को डोली में लादकर नजदीक के स्वास्थ्य सामुदायिक केन्द्र पर ले जाते हैं। लेकिन स्वास्थ्य केन्द्र में डाक्टर तथा दवाईयों का अभाव होता है। मजबूर होकर तीमारदारों को अपने रोगी को नजदीक के शहरों में अथवा नीजि अस्पताल में भर्ती कराना पड़ता है। पर्वतीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवायें एक गम्भीर समस्या और इन इलाकों की स्वास्थ्य सेवायें खुद बीमार है। सरकारी अस्पताल के अधिकार डाक्टर दूर–दराज के इलाकों में रहना पसन्द नहीं करते तथा अपना समय नजदीक के शहरों में बिताना पसन्द करते हैं और सरकारी स्वास्थ्य केन्द्र में दवाइयों का भी अभाव पाया जाता है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्राों में कभी–कभी मंत्री महोदय का दौरा होता है तो शहरी क्षेत्रों से डाक्टर, मंत्री महोदय के

गाड़ी के पीछे–पीछे सरकारी स्वास्थ्य केन्द्र में जाते हैं। मन्त्री महोदय का दौरा समाप्त होने के पश्चात मंत्री महोदय के काफिले के पीछे डाक्टर साहब भी शहरी क्षेत्रों में वापस लौट जाते हैं। मंत्री महोदय का दौरा तो स्वस्थ होता है लेकिन अस्पताल वाद में बीमार हो जाता है। अस्पताल तथा स्वास्थ्य केन्द्र खुद बीमार हो तो रोगी के क्या हालात होंगे?

एक बार पर्वतीय क्षेत्रों के स्वास्थ्य केन्द्र में सी.एम.ओ. साहब का दौरा हुआ। अस्पताल बड़ा था डाक्टर तथा कम्पाउण्डर नजदीक के शहरों में निवास करते थे। प्रातः 11 बजे सी.एम. ओ. साहब का दौरा हुआ। दौरे के समय केवल वार्ड वाय उपस्थित मिला। सी.एम.ओ. साहब ने वार्ड वाय को ही आड़े हाथों ले लिया और पूछा इतने बड़े अस्पताल में एक भी रोगी क्यों नहीं है? वार्ड वाय का उत्तर था– साहब पर्वतीय क्षेत्रों की आवोहवा इतनी अच्छी है कि यहाँ कोई बीमार ही नहीं होता। अगर बीमार हो ही जाये तो हम तुरन्त इलाज करके उसे घर भेज देते हैं। सी.एम.ओ. साहब अस्पताल की आवोहवा तथा इलाज की व्यवस्था समझ गये।

उत्तराखण्ड में स्वास्थ्य सेवाओं का चरमराना एक चिन्ता का विषय है सरकार तथा प्रशासन को स्वास्थ्य सेवाओं जैसे महत्वपूर्ण मसलों पर समझौता नहीं करना चाहिये। पर्वतीय क्षेत्रों के कई अस्पतालों में चिकित्सकों के कई पद रिक्त पड़े हैं। सरकार को चाहिये कि रिक्त पदों को तुरन्त पूर्ति करके तथा दूर–दराज के ग्रामीण इलाके में नये स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना करे ताकि जन–सेवायें सुचारू रूप से चल सके और स्वास्थ्य सेवायें प्रभावित न हों।

5. शिक्षा का अभाव

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में अच्छी शिक्षा का अभाव है तथा यह पलायन को मुख्य मुद्दे में एक कारक तथा कारण है। सरकारी स्कूल के अध्यापक खुद अपने बच्चों को नीजि विद्यालय अथवा च्नइसपब ैबीववसे में पढ़ाते हैं। हालॉकि सरकार ने दूर–दराज ग्रामीण इलाकों में विद्यालय भवनों तथा अध्यापकों की भरपूर व्यवस्था करने की कोशिश की है। लेकिन अध्यापकों की अनुपस्थित ने पूरी व्यवस्था को बिगाड़ कर रख दिया है। कही–कहीं तो विद्यालयों तथा अध्यापकों के होने के बावजूद विद्यार्थी मिलने मुस्किल हो जाते हैं तथा विद्यालय बन्द होने के कगार पर आ जाते हैं। यह हालात उन स्थानों पर है। जहाँ नजदीक में अच्छे स्कूल तथा च्नइसपब ैबीववसे की सुविधा है।

लेकिन दूर–दराज के इलाकों में विद्यार्थी की संख्या काफी होने के बावजूद अध्यापकों की उपस्थित कम दर्ज हो पायी है। अधिकतर अध्यापक या तो अवकाश पर रहते हैं या अपना घरेलू कार्य करते हैं। कभी–कभी सरकारी अध्यापक अपने स्थान पर दूसरे अध्यापक को जो कम शिक्षित होता है और जिसे रोजगार की आवश्यकता होती थी बहुत कम वेतन पर अपने स्थान पर तैनात कर देते थे और अपना घरेलू कार्य करते थे अथवा शहरों में निवास करते थे। यह प्रथा पहले थी, आधुनिक समय में अब जनता जागरूक हो गयी है। अब विद्यालयों की समस्या दूसरी हो गयी है लेकिन समस्या बरकरार है। समस्या के समाधान के लिये सरकारी तन्त्र पूरी कोशिश करता है लेकिन यह नाकाफी है। अच्छी शिक्षा तथा अच्छे विद्यालयों के अभाव के कारण पर्वतीय क्षेत्रों से पलायन जारी है।

6. प्राकृतिक आपदायें

उच्चावच के कारण उत्तराखण्ड का पर्वतीय क्षेत्र काफी सवेदनशील है। यहाँ भूकम्प, पहाड़ों का खिसकना, बादलों का फटना, ओलावृष्टि आदि प्रमुख आपदायें हैं।

भूकम्प की दृष्टि से उत्तराखण्ड को भूगर्भशास्त्रियों ने जोन–4 तथा जोन–5 में रखा है जो कि अति संवेदनशील क्षेत्र है। यहाँ कभी भी बड़ा भूकम्प आने की सम्भावना रहती है। क्योंकि हिमालयी क्षेत्र जो अभी नये पर्वत श्रृखलायें हैं यहाँ जमीन के नीचे काफी हलचल होती रहती है और टिहरी डैम बनने के बाद तो इस क्षेत्र में भूकम्प आने की सम्भावना और ज्यादा बढ़ गयी है। लेकिन सरकार और प्रशासन कितना तैयार है? इसका प्रत्यक्ष प्रमाण केदारनाथ त्रासदी है। सरकार तथा प्रशासन को चाहिये कि वह अपना आपदा प्रबन्धन तन्त्र विभाग को मजबूत रखे ताकि अति संवेदनशील क्षेत्र का आपदा के समय बचाव हो सके।

पर्वतीय क्षेत्रों में पहाड़ों का खिसकना (स्ंदक ैसपकम) भी एक समस्या है। इस खिसकाव से पहाड़ों की तलहटी पर बने गाँव मलवे में समा जाते हैं। इसका उदाहरण– मालपा गाँव है। जिसमें गाँव वासियों समेत कैलाश–मानसरोवर यात्रियों की मृत्यु हो गयी थी। पहाड़ों के खिसकने से यातायात भी वाधित होता है क्योंकि पहाड़ का मलवा मार्गों पर आ जाता है तथा सड़कें अवरूद्ध हो जाती है। कभी–कभी इन सड़कों से मलवा साफ करने तथा सड़कों के पुनःनिर्माण में महीनों का समय लग जाता है। उत्तराखण्ड के कुछ मार्ग सामरिक रूप से भी महत्वपूर्ण है। स्ंदक ैसपकम के समय इन मार्गों की हालात भी खराब हो जाते है और यातायात व्यवस्था अवरूद्ध हो जाती है।

बादलों का फटना भी पर्वतीय क्षेत्रों की गम्भीर समस्या में से एक है। बादलों का फटने की घारणा यह है कि तीन अथवा चार तरफ से अगर पर्वत है और वारिश के बादल उस स्थान पर फस जाते हैं तो बादलों का घनत्व बढ़ जाता है और बादल इकट्ठा उस स्थान पर गिरने के लिये मजबूर हो जाते हैं अतः उस बादल का सारा जल उक्त स्थान पर तेजी से गिर जाता है। जिस स्थान अथवा गाँव में वह बादल का जल गिरता है उस स्थान को पूरा ही बहा ले जाता है। 10–15 वर्ष पहले तक बादलों के फटने की घटना कम होती है लेकिन अब इसकी दर प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है। बादलों के फटने के सम्बन्ध में हमें वैज्ञानिक शोध तथा अध्ययन की आवश्यकता है।

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में उपर्युक्त के अलावा अन्य प्राकृतिक आपदायें भी हैं। इन्हीं प्राकृतिक आपदाओं की समस्या के कारण पर्वतीय क्षेत्रों के बन्दे पलायन करने को मजबूर हो जाते हैं ताकि वह सुरक्षित जीवन जी सकें।

7. पारिस्थितिक असन्तुलन (म्ववसवहपबंस क्पेइंसंदबम)–

पारिस्थितिक असन्तुलन के कारण उत्तराखण्ड में भूकम्प, भूखण्ड का खिसकना, बादलों का फटना, ओलावृष्टि, तापक्रम का बढ़ना, फसलों के चक्र में परिवर्तन, जल के स्तर में कमी आना, मौसम का परिवर्तन होना, हिमालय की वर्फ का पिघलना, जंगली जानवरों का शहरों अथवा गाँवों की ओर आना आदि मुख्य है।

हालॉकि पारिस्थितिक असन्तुलन की समस्या एक विश्वव्यापी गम्भीर समस्या है। लेकिन प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से हिमालय के क्षेत्रों में इसका प्रभाव पड़ना लाजमी है। अतः उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में यह असर देखने को ज्यादा मिलती है। क्योंकि भौगोलिक रूप से तथा प्राकृतिक रूप से यह स्थान अब असुरक्षित होता जा रहा है।

प्रकृति जितना लाभ देती है अगर उसकी सुरक्षा तथा निगरानी न की जाये तो वह ब्याज सहित वसूल भी कर लेती है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मालपा तथा केदारनाथ आदि है। प्राकृतिक असन्तुलन के कारण आजकल फसलें या तो पहले तैयार हो जाती है अथवा फसलों में बौनापन आ जाता है। पर्वतीय क्षेत्रों की फसलों, फूलों, फलों में भी इसका प्रभाव देखने को मिलता है।

फलों जैसे काफल, हसालु, किलमोड़ी, घिगारू आदि स्थानीय फलों में भी प्राकृतिक असन्तुलन का प्रभाव स्पष्ट देखने को मिलता है। फसलों का चक्र परिवर्तन हो गया है। फसल, फल–फूल आदि का उत्पादन भी काफी गिर गया है जो उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों से स्थानीय निवासियों के पलायन के लिये जिम्मेदार है।

8. वनों का कटाव

मानव ने अपने स्वार्थ के कारण वनों का सदियों से अनुचित दोहन किया है। इतिहास साक्षात गवाह है कि अंग्रेजों के समय में वनों का अनुचित दोहन हुआ है। अंग्रेजों ने अपने स्वार्थ के लिये सरकारी इमारतों, रेलवे लाइनों, फर्नीचर आदि के लिये राजसी जीवन–शैली तथा ठाट–वाट के लिये इन वनों का दोहन किया था। वनों का कटान के बाद लकड़ी का के लिये इन वनों का दोहन किया था, वनों का कटाव के बाद लकड़ी का गोदाम होने के कारण हल्द्वानी के समीप उक्त स्थान का नाम काठगोदाम पड़ गया। काठ, लकड़ी का स्थानीय नाम है। वनों के कटाव की कहानी यहाँ पर समाप्त नहीं होती है। काठगोदाम की स्थानीय लकड़ी को अंग्रेजी ने पेशावर, आफगानिस्थान की रेलवे लाइनों में बिझाई गयी है। रेलवे लाइनों की स्लीपर के लिये अंग्रेजों ने वनों का अनुचित दोहन किया था।

वनों का अनुचित दोहन की प्रथा अंग्रेजों ने प्रारम्भ की थी लेकिन उस प्रथा को स्वतन्त्रता के पश्चात (1547) भी बरकरार रखा गया है। उत्तराखण्ड में वनों का कटान अपने शिखर पर है। इस कारण पारिस्थितिक असन्तुलन तथा जल स्तर में गिरावट हो रही है। प्राकृतिक असन्तुलन के कारण उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों से पलायन हो रहा है। अतः स्पष्ट है कि प्राकृतिक असन्तुलन के लिये वनों का कटाव एक कारक है।

9. सामाजिक कारण

प्राचीन काल से ही हमारे समाज को 4 वर्गों में विभाजित किया गया है। ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। ब्राह्मणों का मुख्य पेशा पूजा–पाठ तथा हवन आदि मुख्य व्यवसाय था, लेकिन आधुनिक परिवेश में पूजा–पाठ तथा हवन आदि में कमी के कारण ब्राह्मणों का रोजगार संकट में है। दूसरा कारण ब्राह्मणों के यजमान का पलायन है, तो ब्राह्मणों का पलायन होना भी लाजमी है। क्षत्रीय का मुख्य व्यवसाय खेती–बाड़ी आदि था। आधुनिक समय में कृषि की पैदावार कम होने के कारण, कच्चे माल में कमी के कारण स्थानीय वाणिज्य–व्यापार चरमरा गया है। क्षत्रियों के पलायन के कारण अन्य तीन वर्गों क्रमशः ब्राह्मण वैश्य तथा शूद्र का आर्थिक जीवन असन्तुलित हो गया और उक्त वर्ग भी पलायन को मजबूर हो गये। कृषि पर्वतीय क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। कृषि में उत्पाद की कमी के कारण चारों वर्ग प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से प्रभावित हुये है इस प्रभाव के कारण पलायन तेजी से हुआ है। दूसरा कारण– द्विज वर्ग अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रीय तथा वैश्य अपने को उच्च वर्ग का मानते हैं तथा शूद्र को निम्नस्तर समझा जाता है। उच्च वर्ग अपने स्वार्थ के लिये शूद्र का शोषण करते थे लेकिन आजकल शूद्र वर्ग की स्थिति आरक्षण के कारण थोड़ा–बहुत सुधर गयी है और शूद्र वर्ग अब आर्थिक रूप से सम्पन्न होने लगा है। चूंकि शूद्र वर्ग को अन्य तीन वर्ग अछूत मानते थे लेकिन संविधानिक रूप से अब यह गैरकानूनी है। अतः सम्पन्न शुद्र वर्ग अब उच्च जातियों के साथ रहने को तैयार नहीं के बराबर होते है। पर्वतीय क्षेत्रों से शूद्रों के पलायन का यह भी एक कारण है हालॉकि पर्वतीय क्षेत्रों से सभी वर्ग का समान रूप से पलायन हो रहा है।

10. मनोवैज्ञानिक कारक

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों से सम्पन्न लोग पलायन कर रहे हैं। कुछ थोड़े बन्दे जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं पर्वतीय क्षेत्र के गाँवों में रहने को मजबूर हैं मनोवैज्ञानिक रूप से वह भी आर्थिक रूप से सम्पन्न होने तथा मैदानी क्षेत्रों में पलायन करने का मन बनाये हुये हैं। हालॉकि पर्वतीय क्षेत्रों के गाँवों में सम्पन्न लोग भी निवास करते हैं। लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है।

11. अधिसंरचना में कमी

क) सड़क

उत्तराखण्ड के दूर–दराज तथा दुर्गम क्षेत्र में सड़कों की कमी है। इसके आवागमन में असुविधा होती है तथा यातायात के साधनों में कमी महसूस की जाती है। दुर्गम क्षेत्र समाज के मुख्य धारा से कट जाते हैं तथा वहाँ समाज तथा सभ्यता का विकास नहीं हो पाता है। सड़कें समाज तथा सभ्यता की मुख्य कड़ी है। सड़कों के निर्माण से यातायात की सुविधा भी बढ़ जायेगी तथा दुर्गम क्षेत्र में आवागमन आसान हो जायेगा।

ख) अस्पताल भवन

उत्तराखण्ड के दुर्गम क्षेत्र में अस्पताल अथवा अस्पताल भवनों का अभाव है। अगर अस्पताल है तो वहाँ कर्मचारियों की कमी है। अस्पताल के सम्बन्ध में दुर्गम क्षेत्रों में अधिसंरचना की कमी है। जैसे– अस्पताल भवन, दवाईयाँ, चिकित्सक आदि की भारी कमी है। सरकार तथा प्रशासन को स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्तित होने की आवश्यकता है।

ग) स्कूल भवन

उत्तराखण्ड के दुर्गम क्षेत्रों में कुछ स्कूल भवन जर्जर हालात में हैं भवन, कर्मचारी तथा स्कूल अधिसंरचना के अभाव में छात्रों को समस्या का सामना करना पड़ता है। शिक्षा समाज का आइना है। यदि शिक्षा की अधिसंरचना में कमी होगी तो समाज का उत्थान होना सम्भव नहीं है। यदि समाज तथा सभ्यता का प्रसार करना है तो शिक्षा का प्रसार तथा शिक्षा अधिसंरचना का उच्च विकास करना ही होगा। शिक्षा के अभाव तथा अधिसंरचना का उच्च विकास करना ही होगा। शिक्षा के अभाव तथा अधिसंरचना की कमी के कारण भी दुर्गम क्षेत्र के लोग पलायन कर रहे हैं।

घ) शौचालय

उत्तराखण्ड के दुर्गम क्षेत्रों में शौचालय सुविधाओं का अभाव है। जहाँ शौचालय है भी तो पानी की कमी पायी जाती है। शौचालय का मुद्दा सभ्य समाज के लिये अहम आवश्यकता है। हालॉकि सरकार की नीति में अब बी.पी.एल. के लोगों को शौचालय निर्माण में आर्थिक सहायता दी जा रही है लेकिन यह सुविधा काफी नहीं है।

ड़) संचार व्यवस्थायें

दुर्गम क्षेत्रों की अधिसंरचना में संचार व्यवस्थायें महत्वपूर्ण तथ्य है। प्राकृतिक आपदाओं के समय संचार व्यवस्थायें अहम कड़ी होते हैं। संचार व्यवस्थाओं के कारण दुर्गम क्षेत्र समाज के अन्य स्थानों के सम्पर्क रहते हैं तथा सभ्यता का विकास करते हैं। आधुनिक काल में प्दजमतदमज के सम्पर्क में आने के कारण दुर्गम क्षेत्र भी पूरी दुनियां के सम्पर्क में आ गये हैं लेकिन दुर्गम क्षेत्रों में कही–कहीं संचार व्यवस्थायें न होने के कारण प्दजमतदमज की व्यवस्था नहीं हो पाती है। सरकार को संचार व्यवस्थायें दुरूस्थ रखनी चाहिये ताकि दुर्गम स्थान मुख्य समाज से कटने अथवा अलग न रह सकें।

च) बिजली

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों के दुर्गम क्षेत्रों में कहीं पर अभी भी बिजली की व्यवस्था सुचारू रूप में नहीं है। दुर्गम क्षेत्रों में कुछ गाँव तो ऐसे है जिन्होंने बिजली के खम्भे तक नहीं देखे हैं और जहाँ बिजली की व्यवस्था है भी वहाँ व्यवस्थायें सही रूप से नहीं है। बिजली अधिसंरचना का महत्वपूर्ण हिस्सा है तथा जीवन की आवश्यकता का एक हिस्सा है। अतः दुर्गम स्थानों में बिजली की व्यवस्था एक महत्वपूर्ण समस्या है।

छ) पानी

पारिस्थितिक परिवर्तन तथा जलवायु परिवर्तन के कारण उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में भी जल स्तर में गिरावट आने लगी है। नौले, नदी, गधेरे, पानी के स्त्रोत आदि सूखने लगे हैं। इससे पर्वतीय क्षेत्रों में दुर्गम स्थानों के लोग पानी की बूंद को तरस जाते हैं तथा वह पलायन को मजबूर हो जाते हैं। शुद्ध जल की समस्या एक विश्वव्यापी समस्या है। लेकिन उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में जल की समस्या होना चिन्ता का विषय है जबकि मैदानी क्षेत्रों में अधिकतर पानी हिमालय से पिघलकर नदियों द्वारा जाता है। पर्वतीय क्षेत्रों में जल संचय की कोई असरदार व्यवस्था नहीं है। इसी कारण पर्वतीय क्षेत्रों में शुद्ध जल की कमी पायी जाती है। पानी की कमी के कारण पर्वतीय क्षेत्रों के लोग पलायन को मजबूर है।

ज) पंचायत घर

पर्वतीय क्षेत्र के गाँवों में पंचायत घरों की भी कमी है। इससे समाज में पंचायत आदि का कार्य गाँव के किसी घर या किसी बुजुर्ग के मकान में किया जाता है इसमें मनोवैज्ञानिक प्रभाव के कारण फैसले अथवा निर्णय च्ंतजंसपजल के शिकार हो जाते हैं।

झ) सामुदायिक केन्द्र

पर्वतीय क्षेत्रों में सामुदायिक केन्द्रों का विकास होना चाहिये। सामुदायिक केन्द्रों के विकास होने से गाँवों के सार्वजनिक कार्य उस सामुदायिक केन्द्र में सम्पन्न हो सकते हैं तथा शादी–विवाह आदि के समय उसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

शुद्ध वायु का संचार

शुद्ध वायु का संचार होना चाहिये।
राजनीतिक के स्तर में भी बदलाव आना चाहिये।
उत्तराखण्ड में पलायन की समस्या का निदान होना चाहिये।
देवभूमि में ईष्टदेव का निवास होना चाहिये।
पानी, परेशानी तथा परिस्थितियों का निदान होना चाहिये।
हमें अपनी आदतों में प्रतिदिन सुधार लाना चाहिये।
उत्तराखण्ड में पलायन की समस्या का निदान होना चाहिये।
शुद्ध वायु का संचार होना चाहिये।
वीरों की इस भूमि को सलाम करना चाहिये।।

सन्दर्भ सूची

1. पोखरिया, देव सिंह : कुमाऊँनी लोकगीतों के छन्द योजना।
2. पोखरिया, देव सिंह : कुमाऊँनी लोकगीत।
3. पेठसाली, जुगल किशोर : उत्तराखण्ड के लोक वाद्य।
4. शर्म, प्रतिभा : उत्तराखण्ड के वाद्य यंत्र।
5. भण्डारी, माधवी : ग्राम– मल्ला बिनौला, पो0– जयन्ती, जिला– अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड साक्षात्कार पर आधारित दि0 23–06–2017 समय प्रातः 8:35।
6. बिष्ट, पदम सिंह : ग्राम– लोहरिया साल मल्ला, पो0– कठघरिया, हल्द्वानी, नैनीताल उत्तराखण्ड, साक्षात्कार पर आधारित दि0 12–12–2016।
7. बोरा, बच्ची सिंह : ग्राम– कनरा, पो0– चायखान, जिला– अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड
8. भण्डारी, हेमा : ओम कालोनी, हिम्मतपुर मल्ला, पो0– हरिपुर नायक, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड साक्षात्कार पर आधारित दि0 31–5–2017।
9. जोशी, हीरा बल्लभ पुत्र भवानी दत्त जोशी (सेवानिवृत्त अध्यापक), वन्तोला, पो0– जैंती, जिला– अल्मोड़ा, जन्मतिथि– 20–4–1934, साक्षात्कार पर आधारित दि0 22–9–2013।
10. जोशी, अवनीन्द्र कुमार : सहायक निदेशक, उच्च शिक्षा, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड साक्षात्कार पर आधारित दि0 23–6–2017।
11. पन राम पुत्र श्री झूप राम, बसन्तपुर, सालम, अल्मोड़ा, साक्षात्कार, पर आधारित दि0 18–9–2013।
12. नेगी, भवान सिंह पुत्र श्री मोहन सिंह नेगी, ग्राम– त्यौनरा (बधौरा), जिला– अल्मोड़ा, साक्षात्कार पर आधारित दि0 18 अक्टूबर 2013।
13. जान्हवी : दिल्ली विश्वविद्यालय, ग्राम– वष्ट, पो0– जयन्ती, जिला– अल्मोड़ा, सालम, उत्तराखण्ड साक्षात्कार पर आधारित 18–10–2013।
14. जोशी घनश्याम : उत्तराखण्ड का राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार, बरेली– 243003।
15. जोशी, कृष्णानन्द : कुमायूँ का लोक साहित्य, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
16. नेगी, शन्तन सिंह : ''मध्य हिमालय का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास'' वाणी प्रकाशन, दिल्ली– 1988।
17. बिष्ट, शेर सिंह : कुमाऊँ हिमालय, समाज एवं संस्कृति, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा 1999।
18. बल्दिया, खड़क सिंह : उत्तराखण्ड आज श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, वर्ष– 1996।
19. बच्चीनाथ, ग्राम– मल्ला, बिनौला, पो0– जयन्ती, सालम, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, साक्षात्कार पर आधारित दि0 15–7–2017।